International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 1; Issue 6; June 2016; Page No. 84-84

निराला काव्य में शब्द–शक्ति

Birmati
Research Scholar, Distance Learning, Dept. of Hindi, Kurukshetra University, Haryana, India.

सारांशः
भावबोधन एवं अर्थ वहन करने में सक्षम ध्वनि समूह ही शब्द है। शब्द की महत्ता का सदा गौरवगान होता रहा है, क्योकि लोक व्यवहार का मुख्य एवं अनिवार्य साधन शब्द ही है। ऋग्वेद में शब्द की महता की तुलना ब्रहम से की गई है। शब्द ही वह माध्यम है जिसके द्वारा कवि अपने भावों के अनुकूल शब्दों का प्रयोग कर अपनी अभिव्यक्ति को सशक्ता प्रदान करता है। शब्द के अर्थबोधन की शक्ति या युक्ति ही शब्द–शक्ति कहलाती है।

प्रस्तावना
शब्द की तीन शक्तियां मानी जाती है– अभिधा, लक्षणा, व्यंजना। शब्द को सुनकर या पढकर श्रोता या पाठक को उसका जो लोक प्रंसिद्व प्रचलित अर्थ तत्क्षण ज्ञात होता है उस शब्द का बोध कराने वाली शक्ति अभिधा कही जाती है। लक्षणा के मध्य अभिधा का व्यवधान पड़ता है। अभिधा और लक्षणा के विराम ले लेने पर जिस विशेष अर्थ को प्रतीति होती है। वह शब्द शक्ति व्यंजना कहलाती है। वस्तुतः अभिधा शब्द–शक्ति प्रथम, प्रमुख एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। क्योकि वाणी की स्वाभाविक एवं प्रथम शब्द–शक्ति अभिधा है। महाप्राठा निराला ने अपने काव्य में अभिधा शब्द–शक्ति के साथ–2 तीनों शब्द–शक्तियों को सुन्दर समन्वय किया है।
अभिधा शब्द–शक्ति निराला काव्य का गौरव बढाने में कहा तक समर्थ रही हैं, यह हमें उनकी 'भिक्षुक' कविता में असहाय, दीन रोटी के टुकड़े का आकांक्षी भिक्षुक के चित्रांकन से ज्ञात होता है–

साथ दो बच्चे भी है सदा हाथ फैलाये,
बायें से वे मलते हुए पेट को चलते,
भूख से सूख ओठ जब जाते।
चाट रहे जूठी पतल से वे सभी सडक पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अडें हुए । 1

निराला जी की 'सरोज–स्मृमि' कविता शोकंपूर्ण रचना है जिसमें पुत्री की मृत्यु पर कवि अपने जीवन के समस्त दुःखो का स्मरण कर अपनी पुत्र का उत्तम पोषण न कर सकने के कारण पश्चाताप की अग्नि में झुलस रहे हैं :–

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका।
जाना तो अर्थागमोपाय,
पर रहा सदा संकुचित काय, 2

'देवी सरस्वती' कविता के अन्तर्गत कवि अभिधा वृत्ति द्वारा भारतीय संस्कृति एवं लोकगीतों को अभिव्यक्त करता है।

खेत निराती हैं बालाएं लिए खुरपियां
गाती बारहमासी सावन और कजलियां 3

महाकवि निराला प्रकृति का अत्यंत सुन्दर चित्रण अभिधा शब्द–शक्ति द्वारा ही प्रस्तुत किया है। यथा–

फूटे हैं आमों में बौर, भौंर वन–वन टूटे है।
होली मची ठौर–ठौर, सभी बन्धन छूटे है। 4

कवि ने लक्षणा शब्द–शक्ति द्वारा भी अपने काव्य के सौन्दर्य में वृद्वि की है।
हाय री दासता।

पेट के लिए ही।
लडते है भाई–भाई।
कोई तुम ऐसा भी कीर्तिकामी, 5

यहॉ लक्षणा द्वारा उदर–पूर्ति अथवा पालन–पोषण लक्ष्यार्थ प्रकट होता है।
लक्षणा का अनूठा प्रयोग यहॉ द्रष्टव्य है–

बार–बार गाता मैं
भय नहीं खाता कभी
जन्म और मृत्यु मेरे पैर पर लोटते है। 6

'पैरां पर लोटना' यहॉ मौलिक एवं चमत्कारर्पूण
मुहावरे के रूप में प्रयुक्त हुआ है।
इसी तरह कवि ने व्यंजना शब्द–शक्ति का भी चमत्कारपूर्ण वर्णन किया है–

तुम शिव हो, मैं हूँ शक्ति,
तुम रघुकुल गौरव रामचन्द्र
मैं सीता अथवा भक्ति 7

परतन्त्रकालीन भारतवासियों को सावधान करने के लिए उन्होने व्यंग्यर्पूण भाषा का अनूठा प्रयोग किया है–

जागो फिर एक बार।
प्यारे जगाते हुए हारे सब सारे तुम्हें
अरूण पंख, तरूण किरण
खडी खोलती है द्वार
जागो फिर एक बार। 8

निष्कर्षतः निराला जी का भाष पर पूर्णरूपेण अधिकार है। कवि ने जिस भाव व विचार को जिस रूप में प्रकट करना चाहा उसे अपनों सशक्त शब्दावली के बल पर पाठक तक पहुचायां। तीनों ही शब्द–शक्तियों के माध्यम से वे अपने अभिप्रेत की अभिव्यक्ति में पूर्ण सफल हुए है।

सन्दर्भ ग्रन्थः
1. परिमल–भिक्षुक, पृ0 103
2. अनामिका– सरोज–स्मृति, पृ0 122
3. नये पत्ते– देवी सरस्वती, पृ0 68
4. अर्चना– पृ0 48
5. परिमल– महाराज शिवाजी का पत्र, पृ0 170
6. अनामिका– गाता हूँ मैं गीत तुम्हे सुनाने को, पृ0 97
7. परिमल– तुम और मैं, पृ0 65
8. परिमल– जागो फिर एक बार, पृ0 154।